उस दिन परमेश्वर के अत्यन्त निकट रहने वालों के स्वभाव

पहली बार यूहन्ना को यह दर्शाया गया कि स्वर्ग कैसा है और उसकी सम्पूर्ण दिव्य व्यवस्था कैसी निर्मित है।

जब हम इन बातों को पढ़ते हैं तो हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि परमेश्वर केवल स्वर्ग का “दृश्य” दिखाकर उसे चकित करना चाहता था। नहीं—इनमें हमारे जीवन से जुड़ी बहुत बड़ी गुप्त बातें छिपी हुई हैं, यदि हम उन्हें समझने को तैयार हों।

आज हम संक्षेप में इन स्तरों को देखेंगे—और यह कैसे परमेश्वर के निकट आने के रहस्यों को प्रकट करते हैं।

जब तुम प्रकाशितवाक्य अध्याय 4 को पूरा पढ़ते हो, तुम देखते हो कि यूहन्ना ने खुले स्वर्ग को देखा। और तत्क्षण उसकी आँखों ने परमेश्वर का वह सिंहासन देखा जो महिमा से भरा हुआ था।

लेकिन वह सिंहासन अकेला नहीं था। उसने देखा कि 24 सिंहासन उस मुख्य सिंहासन को घेरे हुए थे, जिन पर 24 प्राचीन बैठे थे। और उन्हीं 24 सिंहासनों के बीच में उसने चार जीवित प्राणियों को देखा, जो परमेश्वर के सिंहासन के सामने खड़े थे। और उन 24 प्राचीनों के पीछे हज़ारों पर हज़ारों स्वर्गदूत परमेश्वर को घेरे हुए थे, उसकी स्तुति और आदर कर रहे थे। प्रकाशितवाक्य 4

उस दिन परमेश्वर के अत्यन्त निकट रहने वालों के स्वभाव

अध्याय को पूरा पढ़ें।

अब हम कुछ वचनों को शांति से पढ़ते हैं—कृपया इन्हें न छोड़ें।

प्रकाशितवाक्य 4:1–6

“इन बातों के बाद मैंने देखा, और देखो, स्वर्ग में एक द्वार
खुला था; और पहली आवाज़ जो मैंने सुनी थी, जो तुरही की सी थी
और मुझसे बोलती थी, ने कहा: यहाँ ऊपर आ, और मैं तुझे वे बातें दिखाऊँगा जो इन बातों के बाद अवश्य होने वाली हैं।
2 और तुरन्त मैं आत्मा में था; और देखो, स्वर्ग में एक सिंहासन रखा था, और उस पर कोई बैठा था।
3 और जो बैठा था, वह यश्बे और सर्दोन के पत्थर के समान दिखता था; और सिंहासन के चारों ओर पन्ने के समान देखने वाला इन्द्रधनुष था।
4 और सिंहासन के चारों ओर चौबीस सिंहासन थे; और उन पर मैंने चौबीस प्राचीनों को बैठे देखा, जो श्वेत वस्त्र पहने थे, और उनके सिरों पर स्वर्ण मुकुट थे।
5 और उस सिंहासन से बिजली और आवाज़ें और गर्जनें निकलती थीं; और सात अग्नि-दीपक सिंहासन के सामने जल रहे थे, जो परमेश्वर की सात आत्माएँ हैं।
6 और सिंहासन के सामने काँच के समान, क्रिस्टल जैसा एक सागर था; और सिंहासन के बीच में और उसके चारों ओर चार जीवित प्राणी थे, जो आगे और पीछे आँखों से भरे थे।”

उस दिन परमेश्वर के अत्यन्त निकट रहने वालों के स्वभाव

प्रकाशितवाक्य 5:11–14

“और मैंने देखा और सुना कि सिंहासन के चारों ओर, और उन जीवित प्राणियों और प्राचीनों के चारों ओर, बहुत से स्वर्गदूतों
का स्वर था; और उनकी संख्या दस हज़ार पर दस हज़ार और हज़ार
पर हज़ार थी,
12 और वे ऊँचे स्वर में कहते थे: ‘वध किया हुआ मेम्ना सामर्थ्य, धन, ज्ञान, शक्ति, आदर, महिमा और धन्यवाद पाने के योग्य है।’
13 और हर प्राणी को, जो स्वर्ग में है, पृथ्वी पर है, पृथ्वी के नीचे है, समुद्र में है, और उन सब में जो उनमें हैं, मैंने यह कहते सुना: ‘जो सिंहासन पर बैठा है और मेम्ने को धन्यवाद, आदर, महिमा और सामर्थ्य युगानुयुग मिले।’
14 और चारों जीवित प्राणियों ने कहा: ‘आमीन।’ और प्राचीनों
ने गिरकर प्रणाम किया।”

अब अच्छा है कि हम अपने आप से पूछें: जो लोग परमेश्वर के सबसे निकट थे, वे इतने विभिन्न रूपों में क्यों दिखाए गए? याद रहे—यहाँ जो सभी वर्णित हैं, वे स्वर्गदूत हैं, कोई मनुष्य नहीं। प्राचीन ही क्यों—युवा क्यों नहीं? चारों जीवित

उस दिन परमेश्वर के अत्यन्त निकट रहने वालों के स्वभाव

प्राणियों के वे विशेष रूप क्यों?

यह इसलिए है कि हम भी यदि परमेश्वर के निकट आना चाहते हैं, तो हमें भी उन ही आध्यात्मिक चरणों से गुज़रना होगा जैसा कि वे, जो उसके सबसे निकट हैं।

जब हम 24 प्राचीनों को देखते हैं, तो समझते हैं: परमेश्वर के बहुत निकट आने के लिए मनुष्य को आध्यात्मिक रूप से परिपक्व, “वृद्ध” होना चाहिए—अपने उद्धार के दिनों में दृढ़ और पके हुए। जैसे अब्राहम। जैसे हनोक, जिसने 300 वर्षों तक परमेश्वर के साथ चला। जैसे एलिय्याह, जिसने जीवन भर उसकी सेवा की। जैसे अय्यूब, हन्ना, शमौन, ज़करयाह और एलिजाबेथ—जो जीवनभर परमेश्वर की धार्मिकता में चले।

जो लोग अपनी उम्र परमेश्वर के साथ बिताते हैं और अपनी जीवन-यात्रा उसके साथ ही पूरी करते हैं, वे आत्मिक रूप से “प्राचीन” होते हैं, और जब वे दूसरी ओर जाते हैं, परमेश्वर के बहुत निकट पाए जाते हैं।

क्योंकि परमेश्वर स्वयं को “प्राचीनकाल का” (दानिय्येल 7:9) कहलाता है।

उस दिन परमेश्वर के अत्यन्त निकट रहने वालों के स्वभाव

चार जीवित प्राणी और उनके चार मुख—और

आज उनका अर्थ

वे 24 प्राचीन परमेश्वर के निकट थे, परन्तु चार जीवित प्राणी उससे भी अधिक निकट खड़े थे—सीधे सिंहासन के सामने।

इन चार करूबों के चार मुख थे:
• दाहिनी ओर सिंह,
• बाईं ओर बैल/बछड़ा,
• पीछे गरुड़,
• आगे मनुष्य का मुख।
(यहेजकेल 1:1–26)

यूहन्ना को प्रत्येक का एक-एक पहलू दिखाया गया, परन्तु प्रत्येक के चारों मुख थे (प्रकाशित 4).

परमेश्वर ने हमें केवल यह नहीं दिखाया कि वे कितने अद्भुत हैं, बल्कि यह कि यदि हम परमेश्वर के निकट आना चाहते हैं, तो हमें भी इन चार आध्यात्मिक स्वभावों को धारण करना होगा।

उस दिन परमेश्वर के अत्यन्त निकट रहने वालों के स्वभाव

1. सिंह का मुख — साहस

सिंह निडर और पराक्रमी होता है।

नीतिवचन 30:29–30:

“तीन जीव ऐसे हैं जिनकी चाल गौरवपूर्ण है, और चार ऐसे हैं
जिनकी चाल शोभायमान है:
30 सिंह, जो सब पशुओं में पराक्रमी है, और किसी के आगे से
नहीं हटता।”

यह दर्शाता है: एक मसीही को अपने विश्वास के लिए साहसी होना चाहिए।
यीशु यहूदा का सिंह है (प्रकाशित 5:5)। वह किसी मनुष्य से नहीं डरा। यहाँ तक कि हेरोदेस को उसने “उस लोमड़ी” कहा।

शैतान भी हमारे पास मेम्ने की तरह नहीं, बल्कि गर्जने वाले सिंह की तरह आता है (1 पतरस 5:8)।
तो हम उसके राज्य को कोमलता से कैसे नष्ट कर सकते हैं?

उस दिन परमेश्वर के अत्यन्त निकट रहने वालों के स्वभाव

2. बछड़े / बैल का मुख — बलिदान

बैल/बछड़ा बलिदान का पशु है। वह दूसरों के अपराध उठाता है।

यह दिखाता है कि एक सच्चा मसीही हर दिन मरने को तैयार हो—अपनी इच्छा के लिए नहीं, बल्कि दूसरों के हित के लिए।

पौलुस ने कहा: “मैं रोज़ मरता हूँ” (1 कुरिन्थियों 15:31)। मसीह ने अपने जीवन को दूसरों के लिए दिया।
उसी प्रकार हमें भी—समय, सामर्थ्य, संसाधन—सब कुछ सुसमाचार के लिए देने को तैयार रहना चाहिए।

3. गरुड़ का मुख — दूरदर्शिता

गरुड़ बहुत दूर तक देख सकता है—भोजन भी, शत्रु भी।

इसीलिए यीशु ने कहा कि अन्त समय में गरुड़ ही सच्चा आत्मिक भोजन पहचानेंगे; बाकी लोग मुर्गों की तरह यहाँ-वहाँ भागते फिरेंगे, भ्रमित, धोखे में पड़े हुए।

उस दिन परमेश्वर के अत्यन्त निकट रहने वालों के स्वभाव

लूका 17:37:

“जहाँ शव है, वहीं गरुड़ इकट्ठे होंगे।”

4. मनुष्य का मुख — बुद्धि और विवेक

मनुष्य सभी जीवों में ऊपर रखा गया है। उसमें बुद्धि, समझ, खोज, कौशल है।
यह सब परमेश्वर की देन है।

और हमें इस बुद्धि का प्रयोग परमेश्वर के लिए करना चाहिए।
हर काम केवल प्रार्थना से नहीं होता—कभी-कभी परमेश्वर हमारी बुद्धि से काम लेता है।

जब परमेश्वर ने मूसा को मण्डप बनाने का निर्देश दिया, उसने उसे बतलाया कि वह बेज़लेल को चुने, जिसे उसने बुद्धि और कौशल से भर दिया है (निर्गमन 31:1–4)।

दुनिया वाले अपने “देवता” (शैतान) के लिए नये-नये काम रचते रहते

उस दिन परमेश्वर के अत्यन्त निकट रहने वालों के स्वभाव

हैं—नई कलाएँ, नए गीत, नई रचनाएँ।
परन्तु कई मसीही वह सृजनात्मक वरदान छिपा देते हैं जो परमेश्वर ने दिया है।

चारों मुख—और परमेश्वर का निकटत्व

जब यह सब हमारे भीतर होगा:
• सिंह जैसा साहस,
• बैल जैसी समर्पण-भावना,
• गरुड़ जैसी दूरदर्शिता,
• और मनुष्य जैसी बुद्धि—

तब हम परमेश्वर के बहुत निकट पाए जाएँगे।
शैतान का कोई भी पक्ष खुला नहीं रहेगा—क्योंकि हर दिशा में उसे “एक मुख” दिखाई देगा।

इन चार जीवित प्राणियों का

उस दिन परमेश्वर के अत्यन्त निकट रहने वालों के स्वभाव

अभिषेक—सात कलीसिया-युगों में भी

कार्यरत था

यदि तुम इस विषय और सात मुहरों के विषय में और विस्तार से जानना चाहते हो, तो इस लिंक में विस्तृत शिक्षाएँ हैं:

(मूल लिंक वही रखा गया है) https://wingulamashahidi.org/2018/07/19/mihuri-saba/

क्या तुम उद्धार पाए हो, मेरे भाई?

क्या तुम जानते हो कि हम उसी युग में जी रहे हैं जिसमें मसीह का दूसरा आगमन अत्यन्त निकट है?
यीशु ने जो भी चिन्ह बताए थे, उनमें से एक भी शेष नहीं है। आज—अभी—अपना जीवन उसके सुप्रतिष्ठ सौंप दो, ताकि वह दिन तुम्हें अचानक न पकड़े।

सच्चे मन से पश्चाताप करो, और फिर बाइबल के अनुसार बपतिस्मा लो—बहुत पानी में डुबोकर, यीशु मसीह के नाम से—पापों की क्षमा के लिए।

उस दिन परमेश्वर के अत्यन्त निकट रहने वालों के स्वभाव

प्रभु का नाम धन्य हो।

JIUNGE NA GROUP LETU LA WHATSAPP HAPA >> WHATSAPP GROUP….

Share on:
WhatsApp